"मैला आँचल" निर्मल आँचल का प्रत्याख्यान

– शिव कैलाश यादव

साहित्य व साहित्यकार सदियों–सदियों तलक वही जीवित व प्रांसगिक रह जाता हैं, जो अपने समय व समाज के सामाजिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक यथार्थ को मनुष्य व मनुष्यता के कसौटी पर कसते हुए उसे जीवन के वृहद संदर्भो से जोड़ हमारे सामने प्रस्तुत कर देता हैं। साथ ही कोई भी कला अपने समय में व अपने समय से बहुत आगे तभी एक प्रतिमान स्थापित कर सकती हैं जब वह समाज के हृदयगति, उसकी लय के साथ जुड़ीं हुयीं हो। उसकी धड़कन समाज की धड़कन हो ऐसे में जो कलाकार साहित्यकार रचता है सृजन करता है सृजित करता है। वह समाज का जीवंत दस्तावेज होता है। जिसमें समाज धड़कता रहता है।जिंदा होता हैं।जिसमे सही को सही व गलत को गलत दर्ज किया जाता हो।और सामाजिक राजनीतिक सांस्कृतिक संतुलन के लिए एक संतुलित मार्ग प्रशस्त किया जाता हो।ऐसे प्रतिमान गढ़ने वाले साहित्य व साहित्यकारों किसी कालखंड की सीमाओं में बंधे नही होते बल्कि वे काल की सीमाओं का अतिक्रमण कर हर कालखंड में जीवित व प्रासंगिक होते चलते हैं।ऐसी ही अनमोल कृति रेणु का मैला आँचल हैं जो समय की सीमाओं से परे जा कर हर कालखंड का प्रत्याख्यान रचता रहता हैं।

किसी भी साहित्य की कसौटी लोक व लोकजीवन होता हैं। जिस साहित्य में समाज की गति को, मिट्टी की सोंधी खुश्बू को, मनुष्य की मनुष्यता, लोक रीति,लोक नीति ,लोक संस्कार, लोक संस्कृति एवं लोक सौंदर्य का जितना समावेश होगा वह साहित्य उतना ही लोकवादी होगा। रेणु के साहित्य में इन लोकवादी तत्वों की उपस्थिति के कारण ही उन्हें धरती के धनी रचनाकार कहा

जाता रहा हैं।रेणु हिंदी के एक ऐसे कथाकार हुए जो उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद के बाद सर्वाधिक लोकप्रिय व पढ़े जाने वाले साहित्यकार हैं।रेणु को आंचलिक उपन्यास का प्रवर्तक कथाकार भी माना जाता हैं। मैला आंचल रेणु की पहली औपन्यासिक कृति है जो सन 1954 ईस्वी में प्रकाशित होती है।इस दृष्टि से यह एक ऐतिहासिक वर्ष हैं। इसी के साथ मैला आँचल का क्या साहित्यिक महत्व क्या हैं इस बात को इस कथन से समझ सकते हैं "मैला आंचल का पहली बार महत्त्व पहचानने वाले आलोचक नलिन विलोचन शर्मा ने ठीक ही उसे गोदान के बाद ही महत्वपूर्ण उपलब्धि माना था। और कहा था कि 'कथा साहित्य में गोदान के बाद जो गत्यावरोध था वह मैला आंचल के प्रकाशन से दूर हुआ'। 1

मैला आँचल में बिहार के पूर्णिया जिले के मेरीगंज गांव की कथा हैं। जो अत्यधिक पिछड़ा हुआ गांव है। इसी गांव के सामाजिक,आर्थिक,सांस्कृतिक,राजनीतिक जीवन के साथ–साथ उस अंचल कि जो विशेषता है और उस अंचल कि जो जीवंतता है उस जीवंतता को लेखक ने इस उपन्यास में रचाया बसाया है।और इस अंचल की जो जिंदगी है वह इस उपन्यास का प्राण तत्व है, उसकी धड़कन है। जो इस उपन्यास में धड़कती रहती है।और यही धड़कन इस गांव की जीवन रेखाएं हैं। रेणु के पास समाज को देखने की उसको परखने की एक सूक्ष्म समाज परखी दृष्टि भी हैं जो समाज को गहरी बेधती हैं।सामाजिक संरचना को समझती हैं।इस संदर्भ में समाजशास्त्री श्यामाचरण दुबे की यह स्वीकारोक्ति उल्लेखनीय है कि "...रेणु के उपन्यास समाज वैज्ञानिक दस्तावेज नहीं है, पर ग्रामीण जीवन को जिस सूक्ष्मता से उन्होंने देखा है,बहुत से समाजशास्त्रियों के लिए कठिन हैं।" 2 यह रेणु की बड़ी उपलब्धियां है जो उन्हें एक बड़े साहित्यकार के रूप में स्थापित करती है।

मैला आँचल का प्रकाशन भले ही आजादी के बाद हुआ हो लेकिन उसमें प्रवाहित विविध धाराएं आजादी के पहले व आजादी के बाद कि दोनों धाराएं बहती हैं।यही कारण हैं कि चाहें राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम का आंदोलन हो या उस दौर में चल रहे सामाजिक एवं वैचारिक आंदोलनो की बात हो या युगपुरुष गाँधी के सत्य ,अहिंसा व स्वदेशी आंदोलन की बात हो रेणु सबको समेट कर कमली नदी की धारा की भांति अपने साहित्य की धारा में उन विचारों को प्रवाहित करते हैं।

रेणु सिर्फ कोरे लेखक नही हैं बल्कि वे लेखक के साथ साथ समाजकर्मी ,सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में भी हमारे सामने आते हैं। जिसमे वे सड़क पर, चौराहों पर,साहित्यकारों के साथ प्रदर्शन करते हुए,कविताएं सुनाते और व्यवस्था विरोधी प्रतिरोध का स्वर उठाते हुए दिखाई देते हैं।इस तरह यदि हम देखे तो रेणु का एक पाँव आंदोलन में था,आंदोलन धर्मी राजनीति में था, तो दूसरा पाँव साहित्य में,सहित्यधर्मी था।यह रेणु की एक बड़ी विशेषता हैं कि वे सिर्फ साहित्यकार नही हैं।इसी धर्मिता का दाय हैं कि रेणु का साहित्य समाज ,राजनीति व आन्दोलनों के बीच बराबर आव–जाही करता रहता हैं।जिससे उनके साहित्य का रुख हमे आंदोलनधर्मी क्रांतिकारी व समाजवादी दिखाई पड़ता हैं।इस आन्दोलनधर्मिता, राजनीतिधर्मिता के बावजूद भी रेणु ने साहित्य की एक खूबी यह हैं कि उनके यहाँ राजनीतिक भाषा व राजनीतिक प्रतीकों का असर हमें दिखाई नही देता हैं।यह रेणु का साहित्यिक,सामाजिक व राजनीतिक संतुलन हैं।जिसमें उनका साहित्य, साहित्य की कसौटी पर खरा उतरता हैं।

रेणु जितने गहरे आंदोलनधर्मी हैं, समाजकर्मी हैं, साहित्यकार हैं वे उतने ही गहरे किसान भी हैं।यही कारण हैं कि उनके कथा साहित्य में ,उनके रिपोर्ताज में,उनकी कहानियों में,उनके निबन्धों व संस्मरणों में समाज की भी चिंता हैं, व्यक्ति की भी चिंता हैं, घर की भी चिंता हैं, बाहर की भी चिंता हैं। गांव में होने वाले शोषण, गांव में फैली हुई विषमता आदि का गहरा चित्रण हैं।

रेणु ने अपने कथा साहित्य में उन सारी चीजों को रखते हुए गाँव को और ज्यादे विस्तार व संपूर्णता में रखने की कोशिश की।क्यों कि गांव में जहाँ विषमता हैं, अभाव है, गरीबी हैं, शोषण हैं, जाती–पाति हैं वही गांव में उमंग भी हैं,उल्लास भी हैं।लोक संगीत भी हैं, लोक संस्कृति भी हैं।जिंदगी की धड़कन भी हैं।उसका उल्लास भी हैं।इसीलिए रेणु जब मैला आँचल में यह कहते है कि "इसमें फूल भी हैं, शूल भी,धूल भी हैं, गुलाब भी, कीचड़ भी हैं,चंदन भी,सुंदरता भी हैं, कुरूपता भी–मैं किसी से दामन बचाकर नही निकल पाया।" यह फूल शूल गुलाब कुरूपता सुंदरता क्या हैं?यही तो गाँव हैं।यही गाँव की वास्तविक तस्वीर हैं ।जिसमे फूल जीवन का उल्लास हैं, तो शूल जीवन के परेशानियों हैं।गाँव की विषमता हैं ।गाँव की गरीबी हैं।जिसे रेणु बड़े करीब से महसूस करते हैं।डॉक्टर नेमीचंद जैन ने मैला आँचल की विशिष्टता पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं कि:–"देहाती जीवन पर पिछले दिनों लिखे गए सभी उपन्यासों से भिन्न है और विशिष्ट भी, क्योंकि अन्य अधिकांश उपन्यासकार देहात की ओर मुड़कर भी जैसे उसे ऊपर से ही देखते रहे अथवा देहाती जीवन की जड़ता अथवा बाहर से आरोपित संघर्षमयी परिवर्तनशीलता में उलझ गए।एक प्रकार से उन्होंने गांव के जीवन को मूलतः शहरी दृष्टि से देखा और वे देहात की समस्याओं को शहर के चौखटे में रखकर काटते –छाटते रहे। देहाती जीवन की आत्मा से उनका साक्षात्कार ही जैसे नहीं हुआ, ना उनकी गहरी तिक्तता से, ना उसके निर्झर जैसे फूटते सरल काव्यमय सौंदर्य से ।इसी से इन अधिकांश तथाकथित ग्रामीण उपन्यासों में जिंदगी की धड़कन नही महसूस होती,देहात के जीवन की अपनी गति के आभास की तो बात ही दूर की है।"3 इसी तरह इसके महत्त्व व इसकी विराटता को हम बच्चन सिंह के इस कथन से समझ सकते हैं:– "इसकी ऊँचाई को लांघ पाना किसी अन्य आंचलिक उपन्यास के लिए संभव नही हो सका।"4 ये गंभीर टिप्पणियां बताती हैं कि मैला आँचल की विराटता व उसका फलक क्या हैं।

मैला आँचल का मेरीगंज ऐसा गाँव हैं जिसमे बारहों बरन के लोग रहते हैं।और पूरा गांव तीन प्रमुख दलों में विभाजित हैं जिसमे कायस्थ सर्वोपरि हैं। राजपूत व यादव इसके बाद आते हैं।और ब्राह्मण लोग अभी भी तीसरी शक्ति के रूप में हैं।और बाकी इन्ही दलो में सुविधानुसार बटे हुए हैं।मेरीगंज गाँव अत्यधिक पिछड़ा हुआ गांव हैं।वह जितना भौतिक रूप से पिछड़ा हुआ हैं सामाजिक रुप से भी वह उतना ही ज्यादा जाति–पाति,अंधविश्वास, रूढ़ियों,अज्ञानता, गरीबी और जहालत आदि में उलझा हुआ हैं।अज्ञानता इस सीमा तक व्याप्त हैं कि गाँव मे अस्पताल खुलने की आहट से जोतखी कहते हैं कि"डॉ. लोग ही रोग फैलाते हैं, सुई भोंककर देह में जहर दे देते हैं,आदमी हमेशा के लिए कमजोर हो जाता है,हैजा के समय कूपो में दवा दाल देते हैं, गाँव का गाँव हैजा से समाप्त हो जाता हैं.... इसके अलावा ,बिलैती दवा में गाय का खून मिला रहता हैं।" 5 इस कदर इस सीमा तक मेरीगंज अज्ञानता के साये में लिपटा हुआ हैं।यह सिर्फ मेरीगंज की ही बात नही है यह बात हिंदुस्तान के गाँव गाँव की बात है।अभी कोरोना के भीषण तबाही को हम सबने देखा और शहरों में कैसे लोग वैक्सीन के लिए लाइनें लगाई और पहले से पहले लेने की हुज्जत की लेकिन गाँवो में वैक्सिनेशन को लेकर जोतखी जी की तरह फतवे बाजी होती रही कि यह लोगो को अपंग बनाने की दवा हैं।और तरह तरह की अफवाहें चलती रही।तो गांव तो आज भी किसी नई चीज को पहली नजर में नही अपनाता वह एक बार उसपर संदेह और उसके नुकसान को वह जरूर आकलित करता हैं।उसके लाभ को करे न करे।यह गाँवो की अपनी मौलिकता हैं उनकी विशेषता हैं।

रेणु ने मैला आँचल में गाँव मे फैले किसी भी मैल(बुराई)से आँख नही बंद करते हैं।वे वह सब कुछ लिखते हैं जो उस गाँव मे अपनी पूरी ताकत के साथ पसरा हुआ हैं।तभी तो मठ के महंत की काली करतूतों को बेपर्दा करते हुए किसनू कहता हैं:–"अंधा महंत अपने पापों का प्राच्छित कर

रहा हैं।बाबाजी होकर जो रखेलिन रखता हैं, वह बाबाजी नही ।ऊपर बाबाजी भीतर दगाबाजी ! क्या कहते हो ? रखेलिन नही ,दासिन हैं ? किसी और को सीखना..... कहा वह बच्ची और कहा पचास बरस का बूढ़ा गिद्ध!"6 गाँव का मठ कैसे व्यसन व्यभिचार दुराचार व शोषण का अड्डा बन गया हैं।इसे हम देख सकते हैं।

सबसे पहले कालीथान में पूड़ी चढ़ाई जाती हैं।इसके बाद कोठी के जंगल की ओर दो पुड़िया फेंक दी जाती हैं, जंगल के देवी देवता व भूत पिशाच के लिए।"7 यह गाँवो की अपनी एक परम्परा हैं कि कुछ भी करने से पहले इस प्रकार के टोटके कर लेना चाहिए।यह सब गाँवो में आज भी होता हैं।इसको हम गांव का लोक जीवन व उसका अंधविश्वास भी कह सकते हैं।जो गाँवो में आज भी व्यवहार में हैं।

डॉ. प्रशांत कुमार !

जात ?

नाम पूछने के बाद ही लोग यहाँ पूछते है–जात?जीवन मे बहुत कम लोगो ने प्रशांत से उसकी जाति के बारे में पूछा हैं।लेकिन यहाँ तो हर आदमी जाति पूछता हैं।"8 डॉ. हिदुस्तानी बताता हैं।पूरे उपन्यास में जाति एक बड़ी समस्या के रूप में आती हैं।यह रेणु के उस गाँव की तस्वीर हैं जिसमे बारहों बरन के लोग हैं।जातीय समस्या भारत की एक राष्ट्रीय समस्या है इसे हम नकार नही सकते हैं।जिसके लिए बहुत से सामाजिक आंदोलन हुए और बड़े बड़े विचारकों ने इस पर चिंतन मनन किया।पर जाति हैं कि जाती नही हैं।रेणु जी ने स्वंय इसकी जटिलता पर कहते हैं कि "जाति बहुत बड़ी चीज हैं। जात–पात नही माननेवालों की भी जाति होती हैं।सिर्फ हिन्दू कहने से ही पिंड नही छूट सकता हैं।ब्राह्मण हैं ?...कौन ब्राह्मण ! गोत्र क्या हैं ? मूल कौन हैं ?...गाँव मे तो

बिना जाति के आपका पानी नही चल सकता।"9 यह जो जाति के भीतर भी जाति गोत्र कुल क्या–क्या फैला हुआ हैं।यह कितना जटिल हैं कि जाति में भी जाति यह एक गंम्भीर बीमारी है।और दमन शोषण अत्याचार का यह एक अस्त्र भी हैं।कितने लोगों का तो सिर्फ जातीय आधार पर शोषण होता रहता हैं।यह एक कड़वा सच है।जिसे रेणु ने चिन्हित किया हैं।गाँवो में जाति व्यवस्था को पद और प्रतिष्ठा से भी जोड़ दिया गया हैं।जिससे लोग चाहकर भी समाज के भय से मुक्त नही हो पाते।हालांकि अब थोड़े बहुत लोग दुःसाहस करके इसकी कुछ बंदिशों को नकारने की कोशिश जरूर कर रहे हैं।जो शुभ संकेत हैं। जो एक उन्नत राष्ट्र के लिए सबसे जरूरी हैं।हमारी राष्ट्रीयता ही हमारी जाति हैं जिसे लेखक ने डॉ. प्रशांत के द्वारा जाति पूछे जाने पर हिंदुस्तानी बोलता हैं ।जो हमारी वास्तविक जाति हैं जिसमे राष्ट्र व मनुष्य दोनों का हित हैं।हम एक होंगे हमारी ताकत बढ़ेगी और हम उन्नति के मार्ग पर आगे बढ़ेगी।यह जातीय समस्या का एक हाल भी लेखक देता हैं कि कोई भी हमारी जाति पूछे तो हम फ़क्र से हिंदुस्तानी बोले न कि कुछ और।

गांव के लोग बड़े सीधे दिखते हैं, सीधे का अर्थ यदि अपढ़,अज्ञानी और अंधविश्वासी हो तो वास्तव में सीधे हैं वे।जहाँ तक सांसारिक बुद्धि का सवाल हो ,वे हमारे और तुम्हारे जैसे लोगो को दिन में पांच बार ठग लेंगे।"10 यह गांव की सच्चाई हैं कि वे लोग अपढ़ अज्ञानी और अंधविश्वासी होते हैं और खूब होते हैं।लेकिन दिन में पांच बार ठगने की बात गांव के भोले भाले लोगो के बस की बात नही।यह तो शहरों की परंपरा हैं कि लोग आदमी को तो ठगते ही ठगते हैं आजकल तो सरकार को भी लोग खूब ठग रहे हैं ।और ठगकर देश छोड़कर फरार भी हो जा रहे हैं।

मैल आँचल में रेणु जी हर उस चीज को तोड़ते हुए नजर आते हैं जो समाज मे मनुष्य मनुष्य के बीच विषमता शोषण दमन असमानता अलगाव का कारक हैं।और हर उस बात को स्थापित करते हैं जो हमारे उन्नति हमारे एकता हमारी खुशाली का मार्ग प्रशस्त करती हैं।यही कारण हैं कि

वे जड़ रास्तो को बंद कर उन्नत शील रास्तो का निर्माण करते हैं।इन अर्थो में मैला आँचल हमारे लिए एक नया रास्ता तैयार करता हैं।नए भारत का नव निर्माण करता हुआ दिखाई पड़ता हैं।यह आजाद होते हुए भारत को उसकी जड़ताओं से मुक्त देखने की आकांक्षा रेणु की आकांक्षा हैं उनका स्वप्न हैं ।जिसका निर्माण वे मैला आँचल में करते हैं।इन्ही आकांक्षाओं के बल पर तो वे सामाजिक संरचना हो तोड़ते हैं।गंधर्व विवाह को रचते हैं,जाति को हिंदुस्तानी बोलते हैं।।प्रशांत व कमली में प्रेम करवाते हैं।क्यों कि उनका विश्वास उन जड़ परम्पराओ को तोड़ने में ही हैं।लेकिन वे यह भी दिखते हैं कि टूट रही समाजिक संरचना से सिंघ जी कैसे आहत होते हैं उसको हम देख सकते हैं:–" सिंह जी यादव टोली की नढेलों का सीनातान कर चलना बर्दाश्त नहीं कर सकते।जोतखी जी ठीक कहते थे– बारबार लाठी––भाला दिखलाते हैं। हौसला बढ़ गया है। अब तो राह चलते परनाम पाती भी नहीं करते हैं यादव लोग! कलियां कभीकभी चिढ़ाने के लिए – नमस्कार करता है। देह में आग लग जाती है सुनकर।लेकिन सिंघ जी क्या करे?"11एक कथन और हैं जब हरगौरी विश्वनाथ से कहता है "काका!इस बार इज्जत बचा लीजिए !क्या आप यही चाहते हैं कि नाइ धोबी और चमार के सामने हम हाथ जोड़कर गिड़गिड़ावे ?....कल से ही रामकिरपाल काका के गुहाल में गाय मरी पड़ी है। चमार लोगों ने उठाने से इनकार कर दिया है।जीवेसर चमार को लीडर आपने ही बनाया है...."12 रेणु जब यह बात कह रहे हैं उस समय हमें नही लगता कि नाइ धोबी चमार में इतनी ताकत आ गयी थी कि वह गांव के सबसे प्रतिष्ठित ठाकुर साहब की अनदेखी कर सके।लेकिन रेणु करवाते हैं।यह रेणु की जागरूकता हैं।यह समय व समाज की मांग हैं। रेणु जी पूरे उपन्यास में एक अंतर्द्वंद बनाये हुए चलते हैं।कि एक तरफ पुरानी परम्पराए हैं तो दूसरी तरफ उन्हें तोड़ भी रहे हैं।और उसकी शुरुआत इस पूरे उपन्यास में सबसे ज्यादा पढ़े लिखे ओहदेदार और संवेदनशील व्यक्ति डॉ. प्रशांत से करवाते हैं।जाति पात हो, प्रेम

विवाह हो, प्रेम से मिलजुल कर रहना हो। पढे लिखे समझदार लोग जब इसकी पहल करेंगे तो समाज के अन्य लोग उसको स्वयं अपना लगे।यह सूत्र भी रेणु देते हैं।यह पूरा उपन्यास ही हमे सूत्रात्मक लगता हैं जिसमे जीवन को ,समाज को सुंदर सुखद शांति पूर्ण उन्नतशील राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत के सूत्र लेखक ने बिखेर रखा हैं।जिसे जागरूक हो कर हमें उन्हें पकड़ने की जरूरत है।

मठ के महंत के निधन के बाद आचारजगुरु आया हैं।और मठ के नए महंत का चयन करना है।आचारजगुरु महंत का चेला रामदास को न बनाकर किसी और को बनाना चाहता हैं।वही बात की वारिश हम है लेकिन गद्दी किसी ओर को।यह बात कालीचरन को काटे की तरह चुभ गयी।उसका भी विवेक जागृत हुआ। तीस पर कालीचरन कहता हैं:–" हम जानते हैं और अच्छी तरह जानते हैं कि रामदास इस मठ का चेला है, महंत सेवादास का चेला है। उसको महंती का टिका न देकर आप एक नंबरी बदमाश को महंत बना रहे हैं।... मठ में हम लोगों के बाप– दादा ने जमीन दान दी है, यह किसी की बपौती संपत्ति नहीं...।"13 यह जो कालीचरन की जागरूकता हैं। यही तो लेखक चाहता हैं की आपके ऊपर हो रहे जोर जुल्म को आप समझो, जानो ।उसका विरोध करो यही जागरूकता तो रेणु जी पूरे गांव में चाहते हैं, समाज मे चाहते हैं, देश मे चाहते हैं और हर व्यक्ति में चाहते हैं।यह उपन्यास सिर्फ आंचलिकता का दस्तावेज ही नही है बल्कि रेणु एक नए गांव को गढ़ रहे हैं।रच रहे हैं।जो जाति–पाति से रूढ़ियों से मुक्त हो, तर्क शील हो, अपने हक अधिकार को जानने वाला हो उसके लिए लड़ने वाला हो।और आचारजगुरु जैसे से अपने हक को छीन सकने वाला हो।यह रेणु के स्वप्नों का भारत हैं उनके स्वप्नों का गांव हैं उनके स्वप्नों का समाज हैं। जिसे वे मेरीगंज के प्रति उत्तर में रचते हैं।

रेणु एक किसान भी हैं।किसानी को समझते हैं।किसान के दर्द को समझते हैं।उसकी तकलीफ को समझते हैं।किसानों के जमीन की बात हो लगान की बात उनके आंदोलन की बात हो।रेणु उनको भी जागरूक व संगठित करते हैं।क्यों कि उनके संगठित रहने में ही उनकी जीत हैं।वरना वे सरकार का कब आहार बन जाये कुछ ठिकाना नही होता।अभी हम लोगो ने किसान आंदोलन को देखा ही हैं कि कैसे उन्हें आतंकवादी खालिस्तानी और न जाने क्या क्या बोल जाता रहा हैं।तब सोशलिस्ट पार्टी कामरेड सैनिक भाषण दे रहा है".... यह जो लाल झंडा है ,आप का झंडा है, जनता का झंडा है,आवाम का झंडा है,इंकलाब का झंडा है।इसकी लाली उगते हुए आफताब के लाली है।यह खुद आफताब है। इसकी लाली इसका लाल रंग क्या है?... रंग नहीं! यह गरीबों, महरुमो,मजलूमों,मजबुरों मजदूरों के खून में रंगा हुआ झंडा है।"14 यह रेणु किसानों को संगठित करने से भी नही चूकते हैं साथ ही उन्हें संघर्षशील बना रहे हैं।यह एक किसान रेणु हैं।

इस प्रकार मैला आँचल सामाजिक राजनीतिक सांस्कृतिक एवं ग्रामीण धरातल का यथार्थ प्रस्तुत करता हैं।जो सामाजिक राजनीतिक सांस्कृतिक गतिरोध हैं।गांव की जड़ता उसके पिछड़ेपन का वही करण हैं।गांव की जो सामाजिक संरचना हैं राजनीतिक समझ हैं।सांस्कृतिक ढांचा हैं उसमें एक बहुत बड़ी सामाजिक पृथकता हैं।जो समाज को वर्गों वर्णों टोलों मुहल्लों में बांटकर रखा हैं।और यही विभाजन हमारी कमजोरी हैं।यह हमारे उन्नतशील मार्ग पर चलने के अवरोधक हैं।रोड़े हैं।इससे मुक्ति में ही समाज की उन्नति हैं।भलाई हैं।हमारी ताकत हमारे ऐक में हैं टुकड़ो में नही।यही कारण हैं कि पूरे उपन्यास के बुनावट में दोहरी संरचना लेखक रचता हैं एक तरफ जटिलताएं हैं तो दूसरी तरफ उनसे मुक्ति और मुक्ति की ताकत भी हैं। लेखक मैला आँचल उपन्यास में सिर्फ आँचल में लगे दाग धब्बों को ही नही दिखता हैं।बल्कि इस दाग धब्बों के समानांतर ही वह एक निर्मल स्वच्छ आँचल का निर्माण भी कर रहा हैं।जो हमे मैले आँचल से

निकलकर निर्मल आँचल में विचरण करवाता हैं।और इस मैले आँचल से छुटकारा व निर्मल आँचल का निर्माण ही लेखक का लक्ष्य हैं।साध हैं।जिसके लिए वह न सिर्फ लिखता हैं बल्कि उसके लिए वह आंदोलन भी करता हैं जेल भी जाता हैं।मैला आँचल की प्रासंगिकता व उसकी सार्थकता स्वच्छ आँचल के निर्माण में हैं न कि मैला आँचल के मैल को जान लेने भर में।आज भी हम सब कही न कही उसी मैल में जिंदा हैं जिस मैल की बात रेणु आज से पचहत्तर साल पहले मैला आँचल में करते हैं।ऐसी परिस्थितियों में मैला आँचल की प्रासंगिकता और अधिक हो जाती हैं वह आज भी हमे हमारे सुंदर समाज के निर्माण के लिए एक स्वस्थ मार्ग को प्रशस्त कर रहा हैं।

1. गोपेश्वर सिंह आलोचना के परिसर वाणी प्रकाशन संस्करण 2019 पृष्ठ संख्या 200

2. वीरेंद्र यादव उपन्यास और वर्चस्व की सत्ता राजकमल प्रकाशन 2017 पृ.10

3. परुकान्त देसाई हिंदी उपन्यास साहित्य की विकास परम्परा में साठोत्तरी उपन्यास चिंतन प्रकाशन 2002 पृ.128

4. बच्चन सिंह आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास पृ.346

5. फणीश्वरनाथ रेणु मैला आँचल राजकमल प्रकाशन पेपरबैक 2005 पृ.18

6. फणीश्वरनाथ रेणु मैला आँचल राजकमल प्रकाशन पेपरबैक 2005 पृ.25

7. फणीश्वरनाथ रेणु मैला आँचल राजकमल प्रकाशन पेपरबैक 2005 पृ.41

8. फणीश्वरनाथ रेणु मैला आँचल राजकमल प्रकाशन पेपरबैक 2005 पृ.48

9. फणीश्वरनाथ रेणु मैला आँचल राजकमल प्रकाशन पेपरबैक 2005 पृ.49

10.फणीश्वरनाथ रेणु मैला आँचल राजकमल प्रकाशन पेपरबैक .पृ 200553

11.फणीश्वरनाथ रेणु मैला आँचल राजकमल प्रकाशन पेपरबैक .पृ 200565

12.फणीश्वरनाथ रेणु मैला आँचल राजकमल प्रकाशन पेपरबैक .पृ 2005170

13.फणीश्वरनाथ रेणु मैला आँचल राजकमल प्रकाशन पेपरबैक .पृ 200593

14.फणीश्वरनाथ रेणु मैला आँचल राजकमल प्रकाशन पेपरबैक .पृ 2005102

सम्प्रति:–शोधार्थी हिंदी विभाग, महाराजा सयाजीराव विश्व विद्यालय बड़ौदा गुजरात संपर्क 9265327904